IJARSCT

International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology

International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal

ISSN: 2581-9429 Volume 2, Issue 2, January 2022 Impact Factor: 6.252

# पर्यावरणीय शिक्षा एवं जागरूकता (भारत के विशेष सन्दर्भ में)

**डॉ. सुमन सिंह**

असिस्टेंट प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष : भूगोल विभाग,

राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, चरखारी, जनपद, महोबा (उ० प्र०)

drsumansinghs@gmail.com

**सारांश :**

मानव और पर्यावरण का संबंध अत्यंत घनिष्ठ है। मनुष्य अपने जीवन के लिए वायु, जल, भूमि, वन, पशु-पक्षी तथा प्राकृतिक संसाधनों पर निर्भर रहता है। प्रकृति हमें जीवन प्रदान करती है, किंतु आधुनिक विकास, औद्योगीकरण, शहरीकरण और बढ़ती जनसंख्या के कारण पर्यावरण निरंतर प्रदूषित होता जा रहा है। वनों की कटाई, जल प्रदूषण, वायु प्रदूषण, प्लास्टिक कचरा, जलवायु परिवर्तन तथा जैव विविधता का ह्रास आज विश्व के सामने गंभीर चुनौतियाँ बन चुकी हैं। इन समस्याओं का समाधान केवल कानूनों और सरकारी योजनाओं से संभव नहीं है, बल्कि इसके लिए समाज के प्रत्येक व्यक्ति में पर्यावरण के प्रति संवेदनशीलता और जागरूकता उत्पन्न करना आवश्यक है। पर्यावरणीय शिक्षा व्यक्ति को प्रकृति के महत्व, संसाधनों के संरक्षण तथा पर्यावरणीय समस्याओं के समाधान के प्रति जागरूक बनाती है। यह शिक्षा मनुष्य में जिम्मेदारी, अनुशासन और पर्यावरण के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित करती है। वर्तमान समय में पर्यावरणीय शिक्षा और जागरूकता का महत्व अत्यधिक बढ़ गया है, क्योंकि स्वस्थ पर्यावरण के बिना मानव जीवन की कल्पना संभव नहीं है।

**मुख्य शब्द :** तकनीकी, नवाचार, जन - भागीदारी, समानता, समृद्ध, रचनात्मकता, पर्यावरणीय शिक्षा, प्रदूषण, विविधता, संतुलित, सकारात्मक, सपना, सतत विकास, हरित ऊर्जा, नगरीकरण, औद्योगीकरण, स्वच्छ भारत मिशन, पर्यावरण संरक्षण, अमृत योजना, दोहन, आत्मनिर्भरता और विशेषताएं आदि |